ISSN: 2277-7857

समकालीन हस्तक्षेप

साहित्य, समाज और संस्कृति की पूर्व-समीक्षित मासिक शोध-पत्रिका

वर्ष 16, अंक 8, अप्रैल 2023

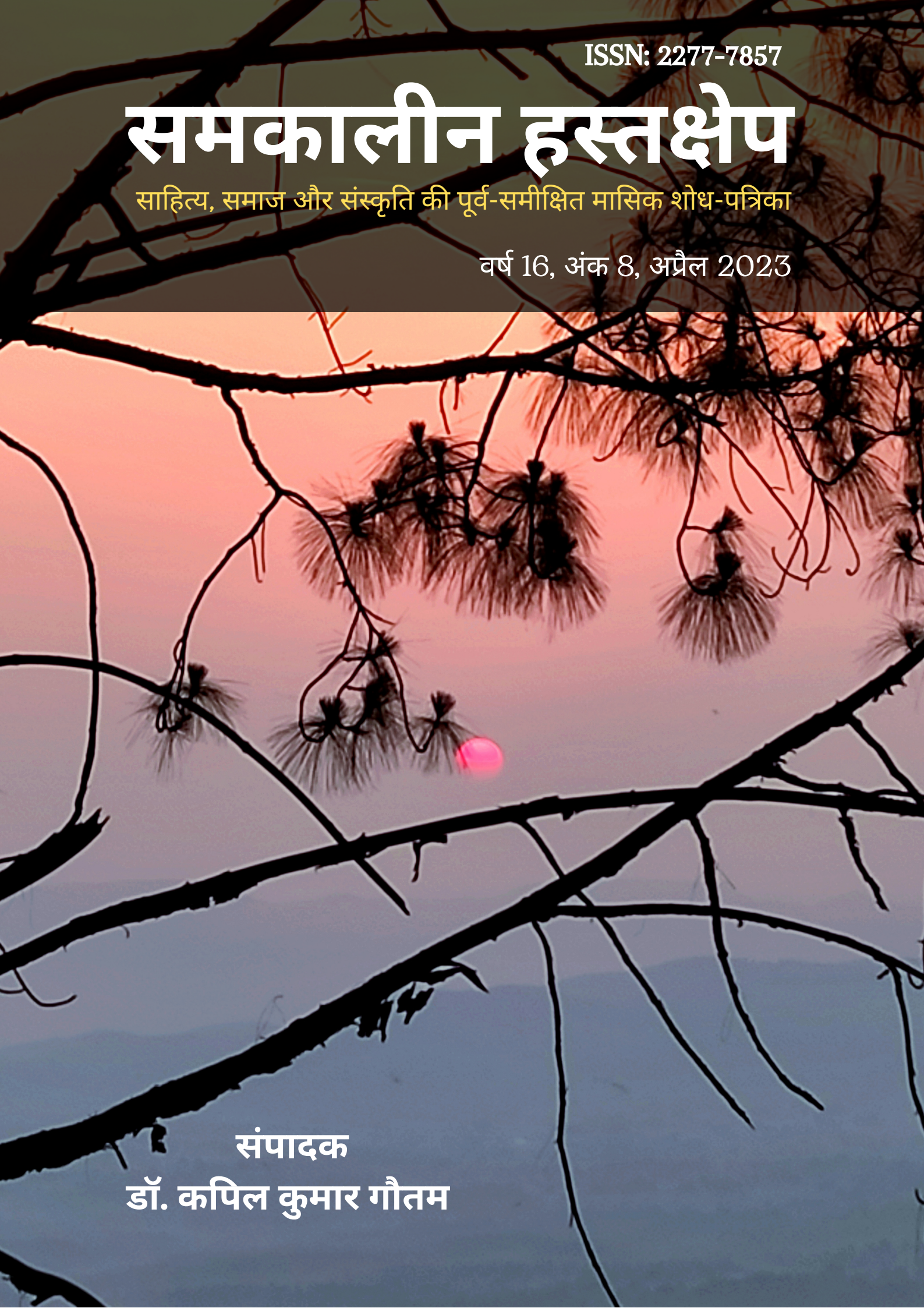

संपादक
डॉ. कपिल कुमार गौतम

'समकालीन हस्तक्षेप' एक पूर्व-समीक्षित मासिक शोध-पत्रिका है। इसका ISSN 2277-7857 (प्रिंट) है। इस शोध-पत्रिका में प्रकाशन हेतु मुख्य विषय हिंदी साहित्य, सामाजिक विज्ञान, मानविकी, संस्कृति, कला, समसामयिक मुद्दे आदि हैं। आप अपने अप्रकाशित शोध-पत्र भेजने हेतु कृपया निम्न विवरण पर संपर्क करें।

Website: www.hastakshep.co.in
E-mail: editor@hastakshep.co.in
WhatsApp No: +91 - 9431109143

वर्ष: 16, अंक: 8, अप्रैल 2023

समकालीन हस्तक्षेप

साहित्य, समाज और संस्कृति की पूर्व-समीक्षित मासिक शोध-पत्रिका

समकालीन हस्तक्षेप एक पूर्व-समीक्षित मासिक शोध-पत्रिका है। इसका ISSN नंबर 2277-7857 (प्रिंट) है। इस शोध-पत्रिका में प्रकाशन हेतु मुख्य विषय हिंदी साहित्य, सामाजिक विज्ञान, मानविकी, संस्कृति, कला, समसामयिक मुद्दे आदि हैं।

इस शोध-पत्रिका के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। समीक्षा, लेखों तथा शोध-पत्रों में उद्धरण के अतिरिक्त, प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश का अनुवाद, प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक माध्यम से पुनर्प्रकाशित नहीं किया जा सकता। केवल सम्बंधित शोध-पत्र के लेखक ही अपने शोध-पत्र को अकादमिक तथा व्यक्तिगत उपयोग करने हेतु निर्बाध रूप से स्वतंत्र होंगे।

© समकालीन हस्तक्षेप

वर्ष: 16, अंक: 8, अप्रैल 2023

कवर तस्वीर: नेतरहाट, झारखण्ड
तस्वीर साभार: डॉ. विनय भारत

Published by

RESEARCH WALKERS
2nd Floor, Rout Niwas, Kuansh,
Near Town Police Station, Bhadrak,
Odisha, India – 756100

E-mail: editor@hastakshep.co.in
Website: www.hastakshep.co.in
WhatsApp/ Call: +91-9431109143

संपादक मंडल

संपादक

डॉ. कपिल कुमार गौतम
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
संघटक राजकीय महाविद्यालय, मीरापुर, बांगर, बिजनौर,
एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश

प्रबंध-संपादक

शेषनाथ वर्णवाल
मैनेजिंग पार्टनर, रिसर्च वॉकर्स,
रॉउत निवास, नियर टाउन पुलिस स्टेशन,
कुआंश, भद्रक, ओडिशा

उप-संपादक

डॉ. रजनी बाला अनुरागी
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, राजिंदर नगर,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. मोहन लाल चढ़ार
एसोसिएट प्रोफेसर,
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक, मध्य प्रदेश

डॉ. दीनानाथ
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
सीएमपी डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

संपादक मंडल सदस्य

डॉ. विपिन कुमार शर्मा
सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, बिष्ट राजकीय महाविद्यालय,
श्रीदेव सुमन विश्वविद्यालय, लंबगांव,
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड

डॉ. प्रवीण कटारिया
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश

डॉ. अनीश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. रजत शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
लक्ष्मीबाई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

डॉ. प्रदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,
सत्यवती कॉलेज, अशोक विहार
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. लेखराम सेलोकर
पी-एच. डी. (बौद्ध अध्ययन)
आनंद बुद्ध विहार, समता नगर,
नागपुर, महाराष्ट्र

डॉ. अमित कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
राजा गार्डन, नई दिल्ली

डॉ. संदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ़ लीगल स्टडीज,
मदरहूड विश्वविद्यालय, रूडकी, उत्तराखंड

डॉ. उमाशंकर कौशिक
असिस्टेंट प्रोफेसर, योग शास्त्र
के.जे. सोमैया इंस्टिट्यूट ऑफ़ धर्मा स्टडीज,
सोमैया विद्या विहार विश्वविद्यालय,
पूर्वी मुंबई, महाराष्ट्र

डॉ. अवधेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि), हिंदी विभाग,
डॉक्टर हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
सागर, मध्य प्रदेश

डॉ. प्रत्युष प्रशांत
पी-एच.डी., सेंटर फॉर वीमेंस स्टडीज,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

डॉ. धनंजय जैन
असिस्टेंट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष,
योग विभाग, कलिंग विश्वविद्यालय, अटल नगर,
नया रायपुर, रायपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. सुनीता गुरुङ्ग
अतिथि प्रवक्ता (हिंदी), श्यामलाल कॉलेज,
मुक्त शिक्षा विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

डॉ. आमिर खान अहमद
असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग,
हरि-गायत्री दास महाविद्यालय, अज़रा
गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम

डॉ. लोकेश चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर, योग विज्ञान विभाग,
श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय,
निंबाहेड़ा, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

डॉ. विकास कुमार पाठक
शैक्षिक सलाहकार, भारतीय भाषा समिति,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

अनुक्रम

वर्ष: 16, अंक: 8, अप्रैल 2023

सम्पादकीय

1.	स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय पत्रकारिता की भूमिका - एक अध्ययन	गिरीश कुमार सिंह, डॉ. संध्या शर्मा	7-13
2.	महिला आर्थिक सशक्तिकरण तथा सामाजिक सुरक्षा	रजनी गोयल	14-19
3.	रीतिकालीन काव्य का स्त्री पक्ष	डॉ. सुजाता मिश्र	20-23
4.	व्यंग्य के पर्याय: हरिशंकर परसाई	जितेन्द्र कुमार	24-30
5.	मिथिला लोक चित्रकला: समकालीन विश्लेषणात्मक अध्ययन	सरिता सिंह	31-35
6.	अजंता की चित्र कला व भगवान बुद्ध की चित्रात्मक यात्रा	रिद्धिमा सर्राफ	36-41
7.	महात्मा गांधी के दर्शन में नैतिकता और सामाजिकता का अनुशीलन	डॉ. अभय कुमार	42-45
8.	'बाँस का किला' में चित्रित आदिवासी जीवन तथा मानवीय मूल्य	डॉ. सुनीता गुरुङ्ग	46-50
9.	संत काव्यधारा में निहित मानव कल्याण की भावना	प्रदीप कुमार सौर	51-54
10.	कला का संक्षिप्त विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. रितु चावला	55-58
11.	कुँड़ुख भाषा एवं उराँव जनजाति का लोक साहित्य	विपिन कुमार	59-63
12.	श्रीमद्भगवत गीता के परिप्रेक्ष में योग पर स्वामी विवेकानन्द का दार्शनिक चिंतन	प्रवेश जाटव, अरुण प्रताप	64-68
13.	अम्बेडकर की सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक अंतर्दृष्टि तथा उसकी प्रासंगिकता	अविनाश बर्मन	69-76

सम्पादक की कलम से...

इस अंक का संपादकीय अंबेडकर जयंती की पूर्व संध्या पर लिखा जा रहा है। केंद्र और सभी राज्य सरकारों ने अंबेडकर जयंती के दिन अवकाश की घोषणा की है। देश भर में अंबेडकर जयंती के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन होगा। समाज हित में सरकार ने इस दिन शराब की दुकानों को भी बंद रखने का निर्णय लिया है। आधुनिक भारतीय राजनीतिज्ञों, दार्शनिकों और समाजशास्त्रियों में डॉ. बी. आर. अंबेड़कर का प्रभाव वर्तमान समाज में बहुत अधिक है। देश का बहुसंख्यक वर्ग अंबेडकर को भगवान की तरह समझता है और उनकी जयंती को महोत्सव और त्यौहार की भांति मनाता है। गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी के बाद अंबेडकर ही ऐसे भारतीय हैं जिन्हें भारत के बाहर दुनिया के सभी प्रमुख देशों में सम्मान प्रदान किया जाता है और उनके जन्मदिवस को मनाया भी जाता है। इक्कीसवीं सदी में भारत में सबसे ज्यादा मूर्तियां डॉ. अंबेडकर की ही स्थापित हुईं हैं। हालांकि इसी अवधि में अराजक तत्वों के द्वारा मूर्ति तोड़ने और अपमानित करने के मामले भी डॉ. अंबेडकर के साथ ही सबसे ज्यादा देखने को मिले हैं।

डॉ. बी.आर. अंबेडकर को इस देश का उद्धारक कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। ऐसा इसलिए क्योंकि इस देश की सबसे बड़ी समस्या (जाति व्यवस्था) पर संवैधानिक प्रावधानों के माध्यम से डॉ. अंबेडकर ने बड़ा आघात किया है। जाति के खिलाफ जागरूकता के प्रयास तो काफी पहले से ही किए जाते रहे हैं। नवजागरण काल में भी जाति व्यवस्था तोड़ने की सामाजिक स्तर पर कोशिश की गईं। लेकिन डॉ. अंबेडकर ने जाति व्यवस्था के विरुद्ध राजनीतिक और संवैधानिक स्तर पर पहल की। उन्होंने संवैधानिक अधिकारों एवं न्यायिक प्रावधानों के माध्यम से जातिगत भेदभाव पर अंकुश लगाने का प्रयास किया। हालांकि सामाजिक स्तर पर आज भी दलित एवं आदिवासी वर्गों को जातिगत भेदभाव एवं शोषण का सामना करना पड़ता है। बारात रोकने, जातिगत अपशब्दों का प्रयोग, पानी पीने में छूत और भेदभाव की अनेक घटनाएं आज भी सामने आती हैं। किंतु आज इस समस्या का निवारण संवैधानिक एवं न्यायिक प्रावधानों के माध्यम से संभव है। इस रुप में जातिगत भेदभाव को समाप्त करने की दिशा में डॉ. अंबेडकर के प्रयास सबसे ज्यादा प्रभावशाली हैं। अगर देश जाति व्यवस्था के विरुद्ध सही समय पर सजग नहीं होता, तो देश की हालत अफ्रीका के देशों के जैसी हो जाती। जहां बीसवीं सदी के अंतिम दशक में जाकर रंगभेद के संदर्भ में उचित न्याय हुआ।

देश के सभी नागरिकों के मध्य समस्त संसाधनों का एक समान वितरण कराने के लिए फ्रांस, अमेरिका और रूस जैसे देशों में रक्त क्रांतियां हुईं। लेकिन भारत को गृहयुद्ध जैसी क्रांति से बचाने का कार्य डॉ. अंबेडकर ने किया। अगर देश में आरक्षण की व्यवस्था लागू नहीं होती, तो उपेक्षित वर्गों की हालत बद से बद्तर हो जाती। संभवत: हाशिए का समाज क्रांति करने के लिए भी बाध्य हो सकता था। आरक्षण एवं संवैधानिक अधिकार मिलने से ही आज हाशिए के समाज को मुख्य धारा में शामिल होने के अवसर प्राप्त हो पा रहे हैं। डॉ. अंबेडकर के प्रयासों से ही एक बहुत बड़े वर्ग को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक धारा में जोड़ने का काम हुआ है।

डॉ. अंबेडकर के योगदान को इस देश की जनता और राजनेताओं ने काफी देर से उचित महत्व देना आरंभ किया। भारत रत्न भी उनको परिनिर्वाण के करीब 34 वर्ष बाद मिला। वर्तमान समय में डॉ. बी.आर. अंबेडकर के नाम पर चुनाव की हार- जीत निर्भर करती है। सभी राजनीतिक दल अंबेडकर के नाम पर वोट बैंक जुटाने की कोशिश में रहते हैं। इस बार सभी राजनीतिक दलों ने भी अपने कार्यकर्ताओं को अंबेडकर जयंती मनाने के आदेश दिए हैं। क्योंकि सबको स्पष्ट हो गया है कि अंबेडकर के नाम पर आज सरकार बनाई और गिराई भी जा सकती है। फिर भी सवाल अभी भी यथावत हैं, क्या अंबेडकर केवल राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए ही याद किए जाएंगे? या हम उनके विचार, दर्शन और सपनों से साक्षात् भी कर पाएंगे।

कपिल कुमार गौतम